Tarun Jhankar

पेड़ बचाएँ

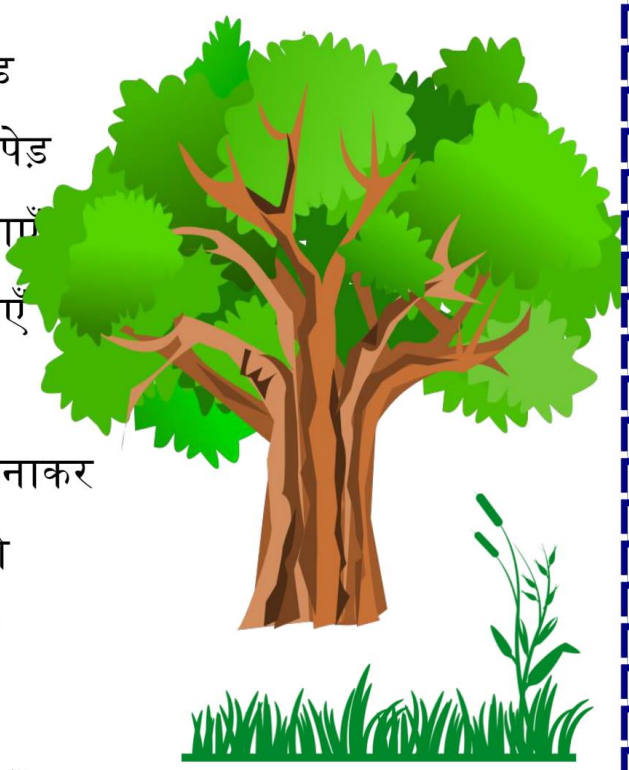

ईश्वर का वरदान हैं पेड़
वातावरण की शान हैं पेड़
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ
हरा-भरा यह देश बनाएँ
गंदगी को दूर भगाकर
पर्यावरण को स्वच्छ बनाकर
धरती पर हरियाली हो
जीवन में खुशहाली हो
पेड़ न कोई कटने पाएँ
जंगल अब ना घटने पाएँ
बढ़ते प्रदूषण पर अब
हम सब मिलकर रोक लगाएँ
आओ मिलकर कसम यह खाएँ
पेड़ लगाएँ , पेड़ बचाएँ

प्रेरणा यादव
XI

वह भी एक जमाना था

बचपन का एक जमाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी
पर दिल तितलियों का दीवाना था

खबर न थी कुछ सुबह की
ना शाम का ठिकाना था
थर-थर काँपती ठंड जब आती थी
माँ गर्म-गर्म दूध पिलाती थी

थक कर स्कूल से मैं आता था
पर खेलने जरूर जाता था
बारिश का मौसम आता था
मैं कागज की नाव बनाता था
समय वह बड़ा सुहाना था
वह भी एक जमाना था।

गौरव अग्रवाल
X

माँ

माँ एक जन्नत का फूल है,
उससे नाराज होना हमारी भूल है।
माँ तो फूलों सी प्यारी है,
दुनिया में सबसे न्यारी है।
माँ ममता की लोरी गाती है,
बच्चों के सपनों को सहलाती है।
माँ प्रेम की वह डोरी है,
जिसके बिना दुनिया अधूरी है।
कभी प्यार कभी डाँट कर सही-गलत सिखलाती है,
कभी डंडे की मार से पढ़ाई का महत्त्व बताती है।
माँ का महत्त्व दुनिया में कभी कम नहीं हो सकता,
माँ जैसा दुनिया में कोई दूसरा नहीं हो सकता.....
माँ जैसा दुनिया में कोई दूसरा नहीं हो सकता।

चहक
XI

मेरा परिचय

कमियाँ तो मुझमें भी बहुत हैं ,
पर मैं बेईमान नहीं ।

मैं सबको अपना मानती हूँ ,
सोचती हूँ फायदा या नुकसान नहीं ।

एक शौक है शान से जीने का ,
कोई और मुझमें गुमान नहीं ।

छोड़ दू बुरे वक्त में अपनों का साथ ,
ऐसी तो मैं इसान नहीं ।

मिलना और मिलाना कोशिश है मेरी,
हर कोई खुश रहे, यह चाहत है मेंरी ।

भले ही मुझे कोई याद करे या न करें ,
लेकिन हर अपने का सम्मान करना यह आदत है मेरी ।

मेध्या भारद्वाज
कक्षा - दसवीं

संगति का प्रभाव

मुहावरों से निर्मित एक रोचक कहानी

रोहन एक शरारती लड़की था । उसका ज्यादा समय खेल - कूद और गुलछर्रे उड़ाने में निकालता भा । वह पढ़ाई से जी चुराता था । उसके माता - पिता उस पर इस वजह से लाल पीले होते रहते थे , परन्तु रोहन के कान पर जूँ तक रेंगती थी जब भी परीक्षा में उसके कम अंक आते तो वह अपना सा मुँह लेकर रह जाता । एक दिन रोहन की कक्षा में एक नया विद्यार्थी सचिन आया जो पढ़ाई के साथ-साथ खेल कूद में भी अव्वल था । उत्तर पुस्तिका में मोती जैसे अक्षर लिखता था। वह सभी अध्यापकों की आँखों का तारा बन गया था । वह एक नेक लड़का था जो अपनी माता का धर के कामो में हाथ बंटाता था। धीरे-धीरे सचिन रोहन का अच्छा मित्र बन गया और उसे आभास हुआ वह भी परिश्रम द्वारा अच्छे अंक ला सकता है उसने खून-पसीना एक कर दिए और अब रोहन भी सचिन की तरह अच्छे अंक लाने और सुन्दर लेख लिख लगा उसकी गिनती भी कक्षा के होनहार छात्रों में होने लगी रोहन की मेहनत ने उसे अपने माता - पिता के गले का हार बना दिया और उनका चहरा खिल उठा ।

अश्मिता
छठी ब

पेड़ लगाऊं ऐसा

पेड़ लगाऊं ऐसा,
जो हो जादू के जैसा ।

बिस्कुट के पत्ते हो जिसमें,
फल है चाकलेट जैसा ।

आइसक्रीम का रस हो जिसमें,
गोंद हो टॉफी जैसा ।

कुल्फी, रबड़ी, मिठाई बन जाए,
दूध बहे कुछ ऐसा ।

डाल पकड़कर अगर हिलाएँ,
टप – टप बरसे पैसा ।

मैं पेड़ लगाऊं ऐसा,
जो हो जादू के जैसा ।

ध्रुव वर्मा
आठवीं ब

पुस्तक

जान का भंडार है पुस्तक,
नैतिकता का संसार है पुस्तक ।

पुस्तक से मिलता है ज्ञान,
जिससे बनता मनुष्य महान ।

पुस्तक है ज्ञान की पिटारी,
जिसमे बसी है दुनिया सारी ।

पुस्तक है एक सरल सी भाषा,
जिसमें टिकी सभी की आशा।

ज्ञान का है अपना अभिमान,
उसी से मिलेगा मान - सम्मान ।

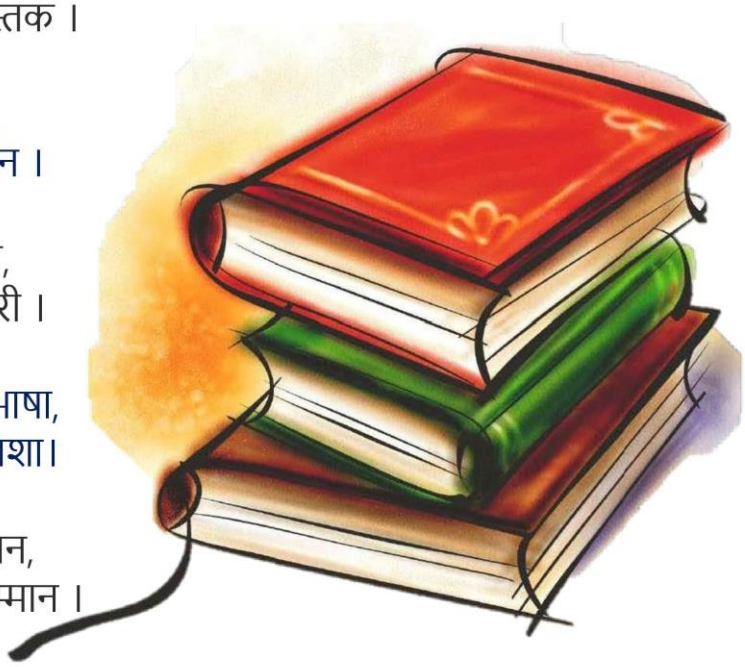

ज्ञान का करो सदा सम्मान,
तभी बनेगा देश महान ।

मानसी जिंदल
आठवीं ब